This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **230**

Unique Paper Code : **205155** **F**

Name of the Paper : **कथा एवं संस्मरण साहित्य**

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi Discipline**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. प्रेमचन्दपूर्व हिंदी उपन्यास **अथवा** प्रेमचन्दयुगीन हिंदी कहानी के विकास पर प्रकाश डालिए । 9

2. 'महादेवी वर्मा के संस्मरणों में जीवन मुखरित हुआ है ।' इस कथन की समीक्षा कीजिए । 9

अथवा

संस्मरण साहित्य की विकास-यात्रा की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए ।

3. किसी **एक** गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 9

(क) "मैंने उमर यों ही नहीं खोई । कुछ दुनिया भी जानी है । दुनिया मोम की चीज नहीं, और न किताब ही है जिसे पढ़कर खतम कर सकते हो । यहाँ जगह-जगह टक्कर खाना पड़ता है और समझौता करना पड़ता है । जीवन दायित्व का खेल है, पग-पग पर समझौता है ।"

P.T.O.

(2)

अथवा

''आँखें आँसुओं से खूब धोई गई हैं और फूल आई हैं, जैसी फूली-फूली धुली कमल की दो लाल पंखुड़ियाँ हों । लेकिन उनके सारे भेद और सारे स्नेह को पलकें मजबूती से ढँके हुए है । सत्य की दृष्टि झपते हुए कपाटों तक पहुँचती है, भीतर नहीं पहुँच पाती और लौट आती है ।''

('परख' से)

(ख) ''उसकी मुखमुद्रा पर विषाद की गहरी छाया घिर आई थी । उसे उन बुड्ढों का ख्याल आ गया जो मौका-बेमौका बीते युगों के गुण गाते रहते हैं । उसे पग्गड़धारी उन पण्डितों की याद आ गई, जमींदारों की प्रशंसा करते-करते जिनकी जीभ चन्दन-चोआ उगलने लगती है । उसका चेहरा कठोर हो आया ।''

अथवा

''घर की औरतें घूँघट निकालकर एक तरफ हो गईं । सयाने सहमे-सहमे-से दूसरी तरफ खड़े थे । भय, आश्चर्य और कौतुहल में डूबे बच्चे बीच आँगन में इकट्ठे हो गए थे । छोटे बच्चे दहशत के मारे अपनी-अपनी माँ की गोद में इकट्ठे हो गए थे । टार्च की तेज रोशनी में संगीनें रह-रह कर चमक उठती थीं । सिवाय बूटों की टापों के और कोई आवाज़ नहीं थी । वह ऐसा सन्नाटा था बेटा, जिसमें साँस तक गिनी जा सकती हैं ।''

('बाबा बटेसरनाथ' से)

(ग) "अरे बेटा, मैं तो थक गई समझाते-समझाते । चार दिन तुम न आये तो और किसी का कुछ न बिगड़ा, मेरे सत्तर करम हो गए– 'अम्मा, आज भी नहीं आये, अब तक नहीं आये, कब आएँगे', 'अम्मा, अब वे नहीं आएँगे, उनका विवाह हो रहा है ।' बस, रात-दिन यही रोना-धोना, न खाना, न पीना, मैं तो समझाते-समझाते दु:खी हो गई बेटा ।"

अथवा

"दैव के आगे किसी का बस नहीं बेटी । मनुष्य तो मात्र अपनी सीमा में ही देख सकता है । मैंने कब यह सोचा था; अस्तु, जो हुआ सो हुआ ! उसे भूल जाओ । अपने पति को सांत्वना दो । सम्भव है उससे तुम्हारा, मेरा और सारे नगर का कल्याण होगा ।"

('सुहाग के नूपुर' से)

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 15

(*i*) 'परख' उपन्यास के 'बिहारी' की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

अथवा

'परख' उपन्यास की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए ।

(*ii*) 'बाबा बटेसरनाथ' उपन्यास में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'बाबा बटेसरनाथ' उपन्यास के शिल्प का विवेचन कीजिए ।

(*iii*) 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास की 'माधवी' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'सुहाग के नूपुर' उपन्यास के उद्देश्य पर विचार व्यक्त कीजिए ।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

"हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को । हमारे सरकार तो आप ही हैं । हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं ? आने का व्यर्थ कष्ट उठाया । यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें ।"

अथवा

"लेकिन हंसा के आगे वह एक छाया-मात्र है, जिनका बस रूप नहीं है, आगे सब-कुछ है । मीठी-मीठी थकान भरी आवाज और गन्ने के ताजे रस जैसी सुगन्ध । वह बड़ा खुश है । एक औरत के रहने से घर कैसा हो जाता है । कितना अच्छा लगता है । ..... वह सोच ही रहा था कि घी की मांग होती है ।"

6. 'पर्दा' **अथवा** 'नमक का दारोगा' कहानी की मूल समस्या पर प्रकाश डालिए । 10

7. 'नाट्य सम्राट' पृथ्वीराज कपूर के अभिनय पक्ष पर विचार व्यक्त कीजिए । 15

अथवा

रामविलास शर्मा निराला के किस रूप से प्रभावित थे ? 'निराला की साहित्य साधना' के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।